TFRI organises day-long seminar

■ Staff Reporter

A DAY-LONG seminar on 'The unlimited possibilities of self-employment from forest wealth' for businessmen and entrepreneurs from in and around the city was organised at Tropical Forest Research Institute (TFRI), on Tuesday. The seminar was organised in association with Jabalpur Chamber of Commerce and Industry.

Welcoming participants, Dr G Rajeshawar Rao, Director Tropical Forest Research Institute, Jabalpur, acquainted them with various technologies developed by the institute and immense possibilites of employment from forests. The seminar included lectures and group discussions on various forest-based employment prospects like Production and Plantation of Bamboos, Pulpwood Plantation, Opportunities of employment through various economically important plants and processing of non wood forest produces like Moringa, Kusum, Bael, Aloevera, Biological Control of insects pests of Teak Plantationas, Biofertilizer production and Sandalwood cultivation etc.

Various environmental and ecological issues with regard to various business groups extended by TFRI were also discussed to provide glimses of work done at the institute.

A detailed group discussion with Prem Dubey, Chairman, Jabalpur Chamber of Commerce and Industry, his enthusistic team and other participants opened up futher possibilites of trainings and assistance to establish start ups of forest based small scale industries.

C. Behera and other seniors scientists like Dr. P. B. Meshram, Dr. Sumit Chakrabarti, Dr. Fatima Shirin, Dr. Nanita Berry, Dr. S Biswas and Dr. Hari Om Saxena were also present at the occasion.

Senior officers with participants attending seminar at TFRI.

वन सम्पदा बन रही है उद्योगों का बड़ा आधार

टीएफआरआई में सम्भावनाओं पर सेमिनार

जबलपुर. वन सम्पदा भी उद्योगों के लिए बड़ा आधार बनते जा रही है। स्टार्टअप के लिए यह सबसे अच्छा क्षेत्र हो सकता है। इसी तरह व्यापार के लिए इसमें देश और विदेशों में व्यापक अवसर हैं। मंगलवार को टीएफआरआई में जबलपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री और टीएफआरआई द्वारा वन सम्पदा से स्वरोजगार की असीम सम्भावनाएं विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इसमें विशेषज्ञों ने वन सम्पदा की विशेषताओं के साथ दुनिया में इनकी आवश्यकता की जानकारी दी।

टीएफआरआई के डायरेक्टर डॉ. जीआर राव ने संस्था की कार्यप्रणाली की जानकारी दी। कार्यक्रम में चेम्बर चेयरमैन प्रेम दुबे, वरिष्ठ उपाध्यक्ष हिमांशु खरे, अजय अग्रवाल, राकेश चौधरी, मुकेश अग्रवाल, वृतिचंद जैन, डीसी जैन, घनश्याम गुप्ता, बंशीलाल गुप्ता, धनंजय वाजपेयी, सतीश पेंढारकर, अखिलेश बलुआपुरी, सुनील महावर उपस्थित थे।

लगेंगी चार हजार बांस उत्पादन इकाइ

टीएफआरआई की वैज्ञानिक डॉ. फातिमा शिरीन ने बताया कि बांस की शक्ति स्टील से भी ज्यादा है। भविष्य में प्रदेश में लगभग 4200 बांस उत्पादन इकाइयां स्थापित होंगी।वैज्ञानिक डॉ. ननिता बेरी बताया कि जबलपुर की प्रकृति सुबबूल के लिए उपयुक्त है। एक हेक्टेयर भूमि पर लगभग 80 से 90 टन का सुबबूल का उत्पादन होता है तथा लगभग दो हजार रुपए टन की कीमत पर बिकता है।

वैज्ञानिक डॉ. विशाखा कुम्भारे ने कहा कि जनवरी व फरवरी में करीब 2.5 करोड़ रुपए की मुनगे की पत्तियों का निर्यात किया गया। यह 30 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है। इसका उपयोग नूडल्स, बड़ी, पापड़, बिस्किट, दवा निर्माण और कॉस्मेटिक्स में हो रहा है। वैज्ञानिक डॉ. पीबी मेक्षाम ने जैविक खाद पर प्रकाश डाला।

पत्रिका Wed, 27 June 2018
epaper.patrika.com/c/2986237

युवाओं के लिए वन संपदा में निवेश बेहतर स्टार्टअप

जबलपुर चैंबर ऑफ कॉमर्स और टीएफआरआई द्वारा वन संपदा में स्वरोजगार विषय पर संगोष्ठी

जबलपुर। नईदुनिया प्रतिनिधि

वन संपदा से खासा लाभ कमाया जा सकता है। बांस, मुनगा, चंदन, पल्पवुड, सुबबूल आदि के व्यावसायिक उत्पादन फायदेमंद साबित हो सकता है। यह जानकारी मंगलवार को जबलपुर चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री व टीएफआरआई के संयुक्त तत्वावधान में 'वन सम्पदा से स्वरोजगार की असीम संभावनाएं' विषय पर संगोष्ठी टीएफआरआई में विशेषज्ञों ने दी। संगोष्ठी में बड़ी संख्या में उद्योगपति, व्यापारी व युवा शामिल हुए। कार्यक्रम में टीएफआरआई के डायरेक्टर डॉ. जीआर राव ने संक्षिप्त प्रस्तुतिकरण दिया।

बांस उत्पादन- टीएफआरआई की वैज्ञानिक डॉ. फातिमा शिरीन ने बांस उत्पादन पर प्रस्तुतिकरण दिया। उन्होंने शासन के बांस मिशन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि निकट भविष्य में प्रदेश में लगभग 4200 बांस उत्पादन इकाईयां स्थापित की जाएंगी। उन्होंने बताया कि मध्य भारत में अधिकतर लाठी एवं कठंग बांस की प्रजातियां पाई जाती हैं। बांस को यदि नवीन तकनीक से जोड़ा जाए तो उससे फर्नीचर, प्री फेब्रिकेटेड मकान, लेमिनेटिड फ्लोरिंग, पेपर, दवाईयां, आदि का निर्माण हो सकता है। बांस की शक्ति स्टील से भी ज्यादा होती है।

पल्पवुड की खेती- यहां संस्थान की वैज्ञानिक डॉ. वनिता बेरी ने पल्पवुड की खेती व अनुसंधान पर प्रकाश डाला व बताया कि सुबबूल, सागौन, खमेर इत्यादि की खेती से किस प्रकार लाभ अर्जित किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि जबलपुर की प्रकृति सुबबूल इसके लिए उपयुक्त है क्योंकि यह प्रजाति किसी भी तरह की भूमि पर उगाई जा सकती है। उन्होंने बताया कि एक हेक्टेयर भूमि पर लगभग 80 से 90 टन का सुबबूल का उत्पादन होता है तथा लगभग 2000 रुपए टन की कीमत पर यह निकलता है।

मुनगे की पत्तियों का उपयोग- संस्थान की वैज्ञानिक डॉ. विशाखा कुम्भारे ने मुनगे की पत्तियों के उपयोग पर प्रस्तुतिकरण दिया। उन्होंने बताया जनवरी व फरवरी 2018 में ही करीब 2.5 करोड़ रुपए की पत्तियों का निर्यात दक्षिण कोरिया, जापान, थाईलैंड, फ्रांस, हांगकांग, स्विटजरलैंड आदि देशों में भारत से किया गया जो कि निरंतर बढ़ रहा है। भारत से मुनगे की पत्तियों का निर्यात 30 प्रतिशत की दर से बढ़ रहा है जिसका उपयोग खादय पदार्थों जैसे नूडल्स, बड़ी, पापड़, बिस्किट के साथ दवा निर्माण कॉस्मेटिक्स आदि क्षेत्रों में हो रहा है।

जबलपुर चैंबर व टीएफआरआई की वन संपदा पर संगोष्ठी में उपस्थित वक्ता।

बायो फर्टिलाइजर

संस्थान के वैज्ञानिक डॉ. पीवी मेश्राम ने जैविक फर्टिलाईजर की बढ़ती उपयोगिता पर प्रस्तुतिकरण दिया। उन्होंने बताया कि सागौन में कीड़ों से किस तरह जैविक तौर पर निपटा जा सकता है।

चंदन के पौधों का रोपण

टीएफआरआई की वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. गीता जोशी ने बताया कि चंदन के उत्पादों का भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में भी अच्छा बाजार है।

व्यापारिक महत्व के औषधीय पौधों की खेती

वैज्ञानिक डॉ. एसएसी बिस्वास ने भारत के बढ़ते आयुर्वेद के बाजार पर प्रस्तुतिकरण दिया व बताया कि मेन्थॉल, लेमनग्रास, आंवला आदि के उत्पाद व उनके अर्क की मांग में अप्रत्याशित बढ़ोत्तरी आई है। उन्होंने बताया कि औषधीय पौधों की खेती व उनके उत्पाद युवाओं के स्टार्ट अप में भी सहायक हैं।

बेल उत्पादन

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. हरिओम सक्सेना ने बेल उत्पादन पर प्रस्तुतिकरण दिया। उन्होंने बताया कि बेल में प्राकृतिक गुण हैं जो कि स्वास्थ्यवर्धक हैं। उन्होंने बताया कि बेल के उत्पाद दवा निर्माण, मिष्ठान निर्माण, जूस उत्पादन आदि में प्रचुर मात्रा में उपयोग किए जा रहे है।

कार्यक्रम में चेम्बर चेयरमैन प्रेम दुबे, वरिष्ठ उपाध्यक्ष हिमांशु खरे, अजय अग्रवाल, राकेश चौधरी, मुकेश अग्रवाल आदि उपस्थित थे।

जबलपुर चेंबर व टीएफआरआई के द्वारा वन संपदा से स्वरोजगार की संभावनाओं पर संगोष्ठी

वन सम्पदा को स्वरोजगार बना सकते हैं व्यवसायी व स्टार्ट अप

भास्कर प्रतिनिधि| जबलपुर|वन संपदा से स्वरोजगार की अपार संभावनाएं हैं। व्यवसायी व स्टार्ट अप वन संपदा से लाभान्वित हो सकते हैं। स्वरोजगार के लिए यह महत्वपूर्ण साबित होते हैं, उक्त बात जबलपुर चेंबर ऑफ कॉमर्स के चेयरमैन प्रेम दुबे ने मंगलवार को चेंबर और टीएफआरआई के संयुक्त तत्वावधान में टीएफआरआई में वन संपदा से स्वरोजगार की असीम संभावना विषय पर आयोजित संगोष्ठी में कही। चेंबर के हिमांशु खरे ने कहा कि रोजगार के अनेक अवसरों के साथ नौजवान वन संपदा से भी काम स्टार्ट कर सकते हैं। टीएफआरआई के डायरेक्टर डॉ. जीआर राव ने बताया कि मप्र, महाराष्ट्र व छत्तीसगढ़ में संस्था का कार्यक्षेत्र है, जहां विभिन्न वन संपदा पर अनुसंधान होते हैं। जिसे व्यवसायी वर्ग स्वरोजगार के तौर पर अपना सकते हैं।संगोष्ठी में चेंबर के अजय अग्रवाल, राकेश चौधरी, मुकेश अग्रवाल, वृतिचंद जैन, डीसी जैन,, घनश्याम गुप्ता, अखिलेश बलुआपुरी, बंशीलाल गुप्ता उपस्थित रहे।पी-3

विशेषज्ञों ने रखें अपने विचार

बांस उत्पादन| टीएफआरआई की वैज्ञानिक डॉ. फातिमा शिरीन ने बताया कि आने वाले समय में प्रदेश में लगभग 42 सौ बांस उत्पादन इकाइयां स्थापित की जाएंगी। बांस को नई तकनीक से जोड़ा जाए तो उससे फर्नीचर, प्री-फेब्रीकेटेड मकान, लेमिनेटिड फलोरिंग का निर्माण हो सकता है।

पल्पवुड की खेती| संस्थान की वैज्ञानिक डॉ. ननिता बेरी ने कहा कि यहां की प्रकृति सुबबूल के लिए उपयुक्त है क्योंकि यह प्रजाति किसी भी तरह की भूमि पर उगाई जा सकती है।

मुनगे की पत्तियों का उपयोग| वैज्ञानिक डॉ. विशाखा कुम्भारे ने बताया कि जनवरी व फरवरी 2018 में ही करीब 2.5 करोड़ रुपए की मुनगे की पत्तियों का निर्यात कई देशों में किया गया।

बायो फर्टिलाइजर| वैज्ञानिक डॉ. पीबी मेश्राम ने जैविक फर्टिलाइजर की बढ़ती उपयोगिता पर विचार रखे और बताया कि सागौन में कीड़ों से किस तरह जैविक तौर पर निपटा जा सकता है।

चंदन के पेड़ों का वृक्षारोपण| डॉ. गीता जोशी ने बताया कि चंदन का उपयोग अधिकांश उद्योगों में होता है। चंदन के उत्पादों का भारत ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी अच्छा बाजार है।

औषधीय पौधों की खेती| डॉ. एससी विश्वास ने बताया कि मेन्थॉल, लेमनग्रास, आंवला के उत्पाद व उनके अर्क की मांग में अप्रत्याशित वृद्धि हुई है।